Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

रामायण में वर्णित राष्ट्र की अवधारणा

कुलदीप

शोधच्छात्र, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

भूमिका

वेद भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूल आधार हैं। चारों वेदों के अनेक सूक्तों में राष्ट्र की और संकेत किया हैं। वेदों में राष्ट्र शब्द अनेक स्थलों में प्रयुक्त हुआ है जैसे- असौ वा आदित्यो राष्ट्रम (काठक सं. 37.11) वह आदिव्य राष्ट्र है। राष्ट्र वैश्वानरः (तै० स० 5.4.7.7) राष्ट्र वैश्वानर हैं। श्री वै राष्ट्रम (श० व्रा० 6.7.37) श्री ही राष्ट्र हैं। यजुर्वेद में कहा है- ``वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा।[1] यह वाजपेय याग से संबंधित मंत्रसमूह का एक मंत्र है इसमें राजा अग्नि में आहुति प्रदान करता हुआ राजा कहता है कि मधुमय जल से अभिव्यक्ति हम अपने राष्ट्र में सर्वदा अग्रसर रूप में जागरूक रहें। अथर्ववेद में उल्लिखित है कि राजा का वरण प्रजाएं राजकर्म के लिए करती हैं, तथा इसे राष्ट्र के सर्वोच्च स्थान पर आसीन करती हैं।

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिभाः प्रदिशः पञ्च देवीः।
वष्र्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व तत्तों न उग्रो वि भजा वसूनि।।[2]

अथर्ववेद में ही कहा है कि ब्रहम्चर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति[3] अर्थात् ब्रहम्चर्य तप से राजा राष्ट्र की विविध रूप से रक्षा करता हैं।

राष्ट्र शब्द की निष्पति

राष्ट्र शब्द की निष्पति राज् धातु से औणादिक प्रत्यय ``ष्ट्रन्'' जोड़कर होती हैं। अर्थात् उणादि के पञ्चपादी पाठ में 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन'' (4.158) सूत्र तथा दशपादी पाठ में 'ष्ट्रन' (8.75) सूत्र के द्वारा 'राजृदीप्तौ' धातु से 'ष्ट्रन्' प्रत्यय होता हैं, इस प्रकार राजते राजति इति राष्ट्रम, इस रूप में राष्ट्र शब्द का अर्थ होता हैं जो दीप्ति परिपूर्ण हो।

पाश्चात्य विद्वान मोनियर विलियम्स ने राष्ट्र ना अर्थ Kingdom, Realm, Empire, Disrtict, Territory, Country, People, Nation तथा Subject बताया हैं।[4]

वामन शिवराम आप्टे द्वारा भी राष्ट्र का अर्थ राज्य, देश अर्थ मे बताया हैं।[5]

संस्कृत वाङ्मय में वैदिक एवं लौकिक ग्रंथों में राष्ट्र एवं राष्ट्रभक्ति के विषय में पर्याप्त विवेचना की गई हैं। संस्कृत साहित्य में महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण आदिकाव्य के रूप में जाना जाता है तथा वाल्मीकि आदिकवि माने जाते हैं। रामायण एक अत्यन्त लोकप्रिय महाकाव्य हैं। भारतीय राष्ट्र की विचारधारा तथा साहित्य को सहस्त्रों वर्षों तक अन्य किसी भी ग्रंथ की अपेक्षा इसने अधिक प्रभावित किया हैं। यह काव्य और आचार शास्त्र का संयुक्त रूप है। क्योंकि मानव जीवन का आदर्श इसमें प्रस्तुत किया गया हैं। रामायण में पितृभक्ति, पुत्रप्रेम, स्वामिभक्ति, प्रजावत्सलता, भ्रातृस्नेह उपाधि के साथ-साथ आदिकवि ने राष्ट्र, राष्ट्रप्रेम तथा

राष्ट्रभक्ति के विषय में भी अपनी अवधारणा प्रस्तुत की हैं। वाल्मीकि समग्र राष्ट्र के हितचिंतक कवि हैं। राष्ट्र का केन्द्रबिंदु राजा हैं।

अर्थात् राजा राष्ट्र के धर्म तथा सत्य का उद्धव स्थल हैं अर्थात् जैसी दृष्टि सदैव शरीर के हित में प्रवृत्त रहती है उसी प्रकार राजा राज्य के भीतर सत्य और धर्म का प्रर्वतक होता है।

यथा दृष्टिः शरीरस्य नित्यमेव प्रवर्तते।
तथा नरेन्द्रो राष्ट्रस्य प्रभवः सत्य धर्मयोः।।[6]

रामायण में वर्णित राष्ट्र का संगठित रूप

रामायण में राज्य, राष्ट्र, जनपद तथा देश के रूप में सामने आया है। रामायण में राष्ट्र-

तां तु राजा दशरथो महाराष्ट्रविवर्धनः।
पुरीमावासयामास दिवि देवपतिर्यथा।।[7]

रामायण में राज्य के लिए जनपद-''कोशलो नाम मुदितः स्फीतों जनपदों महान्......।[8]
तथा देश[9] -

सामन्तराजसंघैश्च बलिकर्मभिरावृत्ताम्।
नानादेशनिवासैश्च वणिग्भिरूपशोभिताम्।।

एवं राज्य-

विदितं भवतामेतद्यथा में राज्यमुत्तमम्।
पूर्वकैर्मम राजेन्द्रैः सुतवत्परिपालितम्।।[10]
मध्येन मुदितं स्फीतं रम्योद्यानसमाकुलम्।
राज्यं भोज्यं नरेन्द्राणां ययौ धृतिमतां वरः।।[11]

का उल्लेख हुआ हैं। पुरी शब्द भी कहीं-कहीं राज्य के अर्थ में प्रयुक्त हैं-कुशाम्बस्तु महातेजाः कौशाम्बीमकरोत् पुरीम्।[12] रामायण में वर्णित जनपद और राष्ट्र सम्पूर्ण देश के लिए प्रयुक्त हैं।[13] जनपद या राष्ट्र शब्द का प्रयोग राजधानी के अतिरिक्त शेष देश के लिए भी रामायण में प्रयुक्त हुआ हैं।-

पुरं च राष्ट्रं च मही च केवला....।[14]
जनपद या राष्ट्र ग्राम महाग्राम[15]
ब्रहमभालान् विदेहांश्च मालवान् काशिकोसलान।
मागधाश्च महाग्रामान् पुण्ड्रांस्त्वड.गास्तथैव च।।

घोष[16] पुर[17] या नगर[18] से मिलकर बना है।

रामायण में राष्ट्र की सबसे छोटी ईकाई ग्राम प्रतीत होती हैं। इसे बड़ी इकाई राज्य मानी जाती थी और सबसे बड़ी इकाई राष्ट्र को माना जाता था। नगर या पुर राज्य के ही विशिष्ट भाग थे। जनपद शब्द में तीनों ही भौगोलिक क्षेत्रों का समावेश है। परन्तु एकत्र न होकर पृथक-पृथक है जहाँ कवि राष्ट्र अर्थ का अभिप्रेत कर जनपद शब्द का प्रयोग करता है वहाँ

Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

वह राज्यार्थक का प्रयोग नहीं करता और नहीं ग्राम्यार्थक का। राज्य ग्राम देश आदि शब्दों के प्रयोग में भी यही स्थिति है। अतः प्रत्येक शब्द अपना पृथक-पृथक अर्थ रखते हुए रामायण में पृथक-पृथक स्थलों पर प्रयुक्त है। ग्राम, महाग्राम, पुर, नगर के अतिरिक्त भूमि-पर्वत वन[19] खानें[20] दुर्ग आदि सभी का संगठित रूप राष्ट्र के स्वरूप को स्पष्ट करता हैं। इसके अतिरिक्त एक स्वतंत्र राष्ट्र के अधीन अन्य राज्य भी होते थे।[21]

रामायण में वर्णित प्रमुख जनपद एवं देश

आध्रंदेश -2.41.12, उत्तर कुरूजनपद-2.94.26, करूष जनपद-1.24.28.29, कारूपथ देश-1.13.24, कैकेय देश-1.73.3, केरल जनपद-4.41.12, कौसल जनपद-1.5.5, 2.100/43-46, चोल देश-4.41.12, पांडय देश-1.1.4, बालिक देश-7.90.21.22, भरत देश- 4.43.11, वत्स देश-2.52.01, किष्किन्धा राज्य- 1.1.65, 4.11.21, लंका देश-4.40.10, 4.58.23 आदि।

राजाविहीन राष्ट्र की स्थिति

राष्ट्र की सेवा ने ही भारतीय वाङ्मय में राजा को भगवान अथवा नरपति के रूप में प्रतिष्ठित किया हैं। राष्ट्र के प्रति अपनी आदर्श भक्तिभावना वाल्मीकि को चिंतित करती हैं। वह राष्ट्र का एक क्षण भी शासक से विहीन नहीं देखना चाहते। वाल्मीकि कहते हैं-

इक्ष्वाकुणाभिहाद्यैव कश्चिन्द्राजा विधीयताम्।
अराजकं हि नो राष्ट्रं विनाशं समवाप्नुयात।।[22]

अर्थात् अभिप्राय यह हैं कि शासक विहिन राष्ट्र निश्चित रूप से नष्ट हो जाता हैं। राष्ट्र को अराजकता से बचाने हेतु जो निर्देश, संदेश महाकवि ने दिए हैं, उनकी प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी हैं। राष्ट्र के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि राजा से विहीन राष्ट्र में मनुष्य कोई पंचायत भवन नहीं बनवाते, रमणीय उधानों का निर्माण भी नहीं होता हैं। बिना राजा के राज्य में वादी और प्रतिवादी के विवाद का संतोषजनक निपटारा नहीं हो पाता हैं। राजारहित राष्ट्र में सोने के आभूषणों से विभूषित हुई कुमारियाँ एक साथ मिलकर संध्या के समय उधानों में क्रीड़ा करने के लिए नहीं जाती हैं। बिना राजा के राष्ट्र में धनी लोग सुरक्षित नहीं रह पाते तथा कृषि और गौ-रक्षा से जीवन निर्वाह करने वाले वैश्य भी दरवाजा खोलकर नहीं सो पाते हैं। राजा रहित जनपद में दूर-जाकर व्यापार करने वाले वणिक् बेचने की बहुत सी वस्तुएँ साथ लेकर कुशलपूर्वक मार्ग पार नहीं कर सकते। राजा के न रहने पर राज्य में किसी भी मनुष्य की कोई भी वस्तु अपनी नहीं रह जाती, जैसे बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती हैं उसी प्रकार राजा विहीन राष्ट्र के लोग एक-दूसरे को खाते-लूटते खसोटते रहते हैं।[23]

राम एक वंदनीय राजा हैं। राम के मर्यादा पुरूषोतम रूपी प्रासाद में वाल्मीकि की राष्ट्रभक्ति आधारशिला के रूप में विधमान हैं। राम के बिना राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती हैं। महर्षि वशिष्ठ राम के वन में जाने की बात पर कैकेयी की भत्र्सना करते हुए कहते हैं कि-

न हि तद् भविता राष्ट्रं रामो यत्र न भूपतिः।
तद् वनं भविता राष्ट्रं रामो यत्र निवत्स्यति।।[24]

अर्थात् राम जहां के राजा न होंगे, वह राष्ट्र, राष्ट्र नहीं रहेगा। लेकिन राम जहां निवास करेंगे, वह वन भी राष्ट्र होगा।

निष्कर्ष

राष्ट्र का स्वरूप भूमि, जन और उसकी संस्कृति से मिलकर बनता हैं, अर्थात् किसी भी राजा के शासित देश में नदी, पर्वत, ग्राम, नगर होते ही हैं वे सब मिलकर ही भूखण्ड राष्ट्र कहा जाता हैं। संस्कृति की प्राचीन रचनाओं में राष्ट्र देश मातृभूमि राजा और राज्य इन सबका समावेश एक ही परिधि में किया गया हैं क्योंकि ये दोनों एक-दूसरे के अभिन्न अंग रहे हैं। राजा राष्ट्र की सेवा और प्रजा के कल्याण का प्रतीक रहा हैं। राष्ट्र एक भावना हैं, एक मनःसंवेग हैं, वस्तुतः राष्ट्र राजनैतिक सम्प्रभुता को अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रतीक हैं। महर्षि वाल्मीकि ने जिस राष्ट्र की परिकल्पना की है यदि वह सारे राष्ट्र का आधार बन जाये ंतो यत्र विश्व भवत्येकनीडम् की यह विचार बहुत ही सारगर्भित होकर उतरेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यजुर्वेद 5/23
2. अथर्ववेद-3/4/2
3. वहीं-11.5.17
4. A SANSKRIT-ENGLISH DICTIIONARY-SIR MONIER-WILLIAMS P.N.-879
5. संस्कृत-हिन्दी कोश-वामन शिवराम आप्टे, पृ० स० 853
6. वा० रा० अयोध्या 67/33
7. वाल्मीकि रामायण-1/5/9
8. वहीं -01/05/05
9. वहीं -01/05/14
10. वहीं -02/02/04
11. वहीं -02/50/11
12. वहीं -01/32/06
13. वहीं -02/50/04
14. वहीं -02/34/55
15. वहीं -04/40/22
16. वहीं -02/83/15
17. वहीं -01/03/36

Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

18. वहीं -01/11/19

19. वहीं -02/34/55

20. वहीं -02/100/46

21. वहीं -01/05/14

22. वहीं -02/67/08

23. वहीं -02/67/9-31

24. वहीं -02/37/29